PUNE RESEARCH SCHOLAR ISSN 2455-314X
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY JOURNAL VOL 7, ISSUE 5

साहित्य की विभिन्न विधाओं में आत्मकथ्य

डॉ. विनि विकास ढोमणे
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिंदी विभाग
जे. एम. पटेल कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय,
भंडारा (महाराष्ट्र) ४४१९०४

सारांश –

साहित्य का प्रयोजन आत्मानुभूति है।लेखक अपने जीवन पथ पर चलते हुए जिंदगी के अच्छे एवं बुरे अनुभवों से युक्त हो जाते है। इन अनुभवों को दूसरों के समक्ष प्रस्तुत करने की तीव्र इच्छा मानव की सहज विशेषता होती है। एक लेखक की अपने अनुभव साझा करने के बहुत से कारण हो सकते है। निश्चित है लेखक आत्मप्रचार, आत्मानुभूति, अन्य अनुभव अभिव्यक्त करने की दृष्टि से या भावुक होकर विभिन्न तरह के साहित्य का लेखन करते है। आत्मकथा साहित्य में मूल रुप से आत्मानुभूति पर आधारित अभिव्यक्ति होती है किन्तु इसमें लेखक के सम्पूर्ण जीवन के आत्मबोध का विवरण सत्यता पर आधारित होता है। साहित्य की अन्य विधाओं में भी लेखक की अनुभूति के आधार पर ही साहित्य का सृजन होता है। अनुभूति दोनों में प्रधान है, इस प्रकार आत्मकथा साहित्य के संस्कारों का प्रभाव अन्य सभी साहित्यिक विधाओं पर होना स्वाभाविक है। आत्मभिव्यक्ति की इस सार्थकता पर विचार करना अधिक उचित होगा। शास्त्रज्ञों ने उसे स्वांत-सुखाय की संख्या प्रदान की है। स्पष्ट है किसी भी साहित्य में आत्मकथात्मक तत्व किसी न किसी रूप

में विद्‌यमान होने पर ही उसे आत्मकथा के रुप में स्वीकार नहीं किया जा सकता। क्योंकि इस आत्मपरकता और आत्मकथा की आत्मपरकता में गुणात्मक और स्तरात्मक अंतर होता ही है। निष्कर्ष रुप से स्पष्ट होता है कि साहित्य सृजन प्रक्रिया में अभिव्यक्ति के लिए उत्सुक साहित्यकार के मानस की अस्पष्ट अनुभूतियाँ जब विशिष्ट कल्पना शक्ति द्‌वारा अभिव्यक्ति की ओर अग्रसर होने लगती है तब साहित्यकार की अनुभूतियाँ, भावनाएँ, स्मृतियाँ एवं वस्तुबिम्ब मानस पटल पर मूर्त रुप धारण करके साहित्य का सृजन करती है।

शोध पत्र -

साहित्य का प्रयोजन आत्मानुभूति है। स्वाभाविक है बिना अनुभूति की अभिव्यक्ति का प्रश्न ही कहाँ उठता है। लेखक अपने जीवन पथ पर चलते हुए जिंदगी के अच्छे एवं बुरे अनुभवों से युक्त हो जाते है। इन अनुभवों को दूसरों के समक्ष प्रस्तुत करने की तीव्र इच्छा मानव की सहज विशेषता होती है। एक लेखक की अपने अनुभव साझा करने के बहुत से कारण हो सकते है। कभी- कभी लेखक बुरे अनुभवों या प्रतिकूल घटनाओं से इतना अधिक कुण्ठा ग्रस्त हो जाता है की वह उन तनावों से मुक्त होने का कोई न कोई साधन तलाश करने लगता है, जिसके परिणाम स्वरुप वह साहित्य का लेखन कर अपना मन शांत करता है। कभी -कभी वह अपने अनुभव और विचारों के माध्यम से पाठकों को अवगत करता है। निश्चित है लेखक आत्मप्रचार, आत्मानुभूति, अन्य अनुभव अभिव्यक्त करने की दृष्टि से या भावुक होकर विभिन्न तरह के साहित्य का लेखन करते है। आत्मकथा साहित्य में मूल रुप से आत्मानुभूति पर आधारित अभिव्यक्ति होती है किन्तु इसमें लेखक के सम्पूर्ण जीवन के आत्मबोध का विवरण सत्यता पर आधारित होता है। साहित्य की अन्य विधाओं में भी लेखक की अनुभूति के आधार पर ही साहित्य का सृजन होता है। अनुभूति दोनों में प्रधान है, इस प्रकार आत्मकथा साहित्य के संस्कारों का प्रभाव अन्य सभी साहित्यिक विधाओं पर होना स्वाभाविक है। आत्मभिव्यक्ति की इस सार्थकता पर विचार करना अधिक

उचित होगा। साहित्य के संदर्भ में उसकी आत्मभिव्यक्ति उसके आत्मा- परितोष में हैं। शास्त्रज्ञों ने उसे स्वांत-सुखाय की संख्या प्रदान की है। अपने को पूर्णता के साथ अभिव्यक्त करना व्यक्तित्व की सबसे बड़ी सफलता है।

इस आधार पर कहा जा सकता है कि आत्मकथा साहित्य के संस्कारों का प्रभाव अन्य साहित्यिक विधाओं में आवश्यक रूप से विद्यमान् हैं। निम्नलिखित लेखकों और कवियों के साहित्य के आधार पर यह प्रमाणित होता है कि आत्मभिव्यक्ति के बिना प्रत्येक साहित्य अधूरा है। श्रीकांत दीवाना अपने उपन्यास 'भटकती लहर' के संदर्भ में लिखा कि 'इस कृति में चाहकर भी मैं अलग न हो सका मेरे जीवन की तमाम उलझनें पिघल निकलकर इसमें रंग भरती रही है। (१) अपने उपन्यास 'कौन किसे बाँधे' में रज्जन त्रिवेदी लिखते हैं 'सामाजिकता अकेलेपन से बाहर होकर एक -एक से जुड़ने में नए नए अर्थ ग्रहण करती चली जाती है। जीवन मूल्यों के साथ जुड़ने - बँधने और घुलमिल जाने की स्थितियां आदमी को बाहर से ही प्रभावित नहीं करती बल्कि भीतर तक उसका गहरा संस्पर्श होता है।(२) 'स्वर परिवेश का' में गिरिजा कुमार माथुर कवयित्री के संबंध में लिखते हैं 'कवयित्री के पास कहने को कुछ है जो उसका अपना हैं जो तीव्रता के स्वयं अनुभूत है, आरोपित नहीं। कविताओं में बड़ी सहजता के साथ व्यक्तिगत अनुभवों का ताप व्यक्त हुआ है।(३) 'संसद और सड़क' नाटक और एकांकी के संबंध में हीरालाल वर्मा ने कहते है 'जहाँ तक इन एकांकियों का संबंध है ये साहित्य समाज और राजनीति में फैले हुए किसी वाद विशेष सी प्रतिबद्ध न होकर केवल मेरी लेखनी की निष्ठा और अनुभवों की इमानदारी से ही प्रतिबद्ध है। (४) 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' उपन्यास में धर्म के संबंध में धर्मवीर भारती ने कहा 'मैं लिख लिखकर सीखता चल रहा हूँ और सीख -सीखकर लिखता चल रहा हूँ जो कुछ लिखता हूँ उसमें सामाजिक उद्देश आवश्यक है, पर वह स्वान्तः सुखाय भी है। यह आवश्यक है कि मेरे स्व में आप सभी सम्मिलित हैं। आप सबों पर सुख- दुःख, वेदना, उल्लास मेरा अपना है। (५)

उपर्युक्त कथनों से स्पष्ट है कि आत्मानुभूति अभिव्यक्ति के बिना साहित्य लेखन अधूरा है। अक्सर साहित्यकार, कवि अपनी भावना,वेदना,अनुभव, इच्छा,खुशी,

तर्क-वितर्क,अपने विचार और कार्य आदि को पाठको से साझा करना चाहते है स्वाभाविक है, उनका जीवन साधारण और सरल बिलकुल नहीं होगा उनकी विचार शैली और जीवन के प्रति दृष्टिकोण भी निराला और शिक्षाप्रद होगा। फिर वह आत्मविश्लेषण किसी भी साहित्यिक विधा में करे वह उनके अनुभव और संस्कारों और विचारों पर ही आधारित होगा । हम साहित्य की विभिन्न विधाओं में आत्मानुभूति कि आत्मकथ्य दिखेंगे जिसके माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि किसी भी विधा में साहित्य का लेखन लेखक की आत्मप्रवंचना ही होती है। मुल्कराज आनंद ने अपने उपन्यास 'सात साल' में अपनी उन सात सालों का उल्लेख किया जो उन्होंने स्वयं अनुभव किए हैं। इस प्रकार अपनी आत्मकथा, उपन्यास के माध्यम से अभिव्यक्त की। उपन्यास में उनका आत्मकथ्य कुछ इस तरह से है की 'जब मैं अपने अर्ध-अचेतन बचपन की प्रारंभिक सात सालों पर दृष्टि डालता हूँ तो छावनी के कठोर अनुशासित और संकीर्ण वातावरण के बावजूद मैं अपने आप को बहती हुई नदी के सदृश पाता हूँ।(६) महादेवी वर्मा अपने संस्मरण 'मेरा परिवार' के माध्यम से अपने कॉलेज के दिनों का उल्लेख करती हुई कहती है 'बालक के लिए खिलौना टूटने की दुखद अनुभूति भी इतनी तीव्र और सत्य हो सकती है जितनी वयस्क की आत्मीयजनों के विद्रोह की न हो। इसी से मनोवैज्ञानिकों के निकट बाल्यकाल की सुख-दुखात्मक परिस्थितियों का विशेष महत्व है।(७) दुष्यंत कुमार ने अपनी कविता 'आवाज के घेरे' के माध्यम से अपनी विवश चेतना को उजागर किया -

मेरे हाथ में क़लम लेकर मुझसे भी अच्छे गायक का पथ जोह रहे
मेरी दृष्टि कुहासे में है
नई सृष्टि - रचना की संभावित बुनियादे
देख रही है
मेरी सांसे
अस्तित्व की सार्थकता को जूझ रही है
मेरी पीड़ा हर उदास चेहरे से मिलकर
एक नई उपलब्धि खोजती भटक रही है

मेरी इच्छा कोई वातावरण बनाने में तत्पर है
मेरी हर आकांक्षा
आने वाले कल में जाग रही है
मेरी विवश चेतना
जग में बसने को घर माँग रही है।(८)

इसी प्रकार कमलेश्वर ने अपने संस्मरण 'यादों के चिराग' में व्यवहारिकता के साथ व्यक्तित्व को भी महत्व दिया है। वैसे संस्मरण में व्यक्तिगत अनुभूति और आत्मबोध की प्रधानता रहती ही है। कमलेश्वर ने अपने अंतर्मन को उजागर करते हुए कहा 'मेरा मन कामनाओं से कभी रिक्त नहीं रहा है, पर महत्वाकांक्षा के उत्पाती अँधेड़ो ने मुझे कभी मेरे जड़ो से नहीं उखाड पाया। ईर्ष्या कभी मुझ पर हावी नहीं हो पाई। स्पर्धा की कोई जरुरत मुझे महसूस नहीं हुई। व्यक्तिगत सुख -दुख और समय के अनुभव ने मुझे कभी अकेला नहीं छोड़ा। हमेशा मेरे पास इतना रहा है कि अपनी ज़िंदगी और रचना के साथ मैं भरपूर जिया हूँ। (९) संस्मरण की तरह डायरी में भी आत्मविश्लेषण की प्रधानता होती है किंतु संस्मरण की अपेक्षा डायरी में आत्मभिव्यक्ति का ज़्यादा प्रादुर्भाव होता है, इसमें लेखक स्वयं की दिनचर्या का उल्लेख करता है। चंद्रशेखर जब जेल में थे तब उन्होंने 'मेरी जेल डायर' लिखी २४ जुलाई १९७५ में उन्होंने अपने मन के सूनेपन को इस प्रकार व्यक्त किया 'आज बड़ा सूना -सूना लग रहा था। एकाकीपन खला। यो ही अकेला बैठा देर तक सोचता रहा। अनेक विचार आए और चले गए। क्या सूनापन यही है? ऐसा तो नहीं। बाहर रहते हुए भी कभी- कभी सारी जिंदगी निरर्थक जान पड़ने लगती थी। एक तरह की रिक्तता भर जाती थी। (१०)

रेखाचित्र में भी लेखक की आत्मानुभूति की ही प्रधानता रहती है इसे लेखक की जीवन दृष्टी, जीवन दर्शन की व्याख्या या जीवन की आलोचना कह सकते है। रेखाचित्र की संक्षिप्त परिधि में जो कुछ वर्णित होता है उसमें लेखक की अपनी अनुभूतियाँ, मानसिक प्रतिक्रिया, विचार, मान्यताएं तथा आदर्श का शब्द चित्र होता है। जिस से पाठक के भाव, विचार जाग्रत हुए बिना नहीं रह सकते। रेखाचित्र यथार्थ

पर आधारित वितरण होता है। रेखाचित्र का मुख्य लक्ष्य होता है चरित्र विशेष के बाद और अभ्यांतर दोनों ही के मार्मिक और संवेदनशील तत्वों को उभारकर पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत कर देना। (११) जैसे शिवदान सिंह ने रेखाचित्र की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए लिखा साहित्य में रेखाचित्रकार एक ऐसा कलाकार हैं जो अपने पारिवारिक जीवन कि वास्तविकता के किसी अंग को पशु, पक्षी, वृक्ष, इमारत, खंडहर, स्त्री-पुरुष, स्थान, गाँव, मुहल्ला, नगर आदि किसी भी जड़ अथवा चेतन वस्तुओं को एक चित्रकार के समान अंकित करता है। वास्तविकता के उस अंग को कल्पनासात करके उसके मर्म को संक्षेपण और पुनर्संगठन द्वारा अधिक प्रभाव पूर्ण संगठित और समतल से उभार करके अपनी भाव प्रक्रिया से उसके प्रभावों को अतिरंजित कर देता है। लेखक की व्यक्तित्व का प्रक्षेपण तटस्थता का उपक्रम सा करता इस सूक्ष्म सहानुभूति में विद्यमान रहता है। इस प्रकार रेखाचित्र में किसी वस्तु, मनुष्य या स्थान के बाद बाहय रूप से उसकी आंतरिक सुंदरता- कुरुपता, संपन्नता- विषमता को पकड़ने की चेष्टा होती है। उसमें अनुभूति और अनुभव का चित्रण ही मुख्य हैं।

हिंदी का कथा साहित्य परिणाम और स्तर दोनों दृष्टियों से महत्वपूर्ण है यदि हम भी प्रतिनिधि कलाकारों के कर्तव्य पर उनकी दृष्टि से विचार करें तो हमें कई मौलिक चिंतन के साथ साथ आत्मविश्लेषण व अनुभूति की सूत्र प्राप्त होते हैं। जैसे कथा सम्राट प्रेमचंद की कथा साहित्य में देखें तो उनकी कहानियाँ यथार्थ पर ही आधारित न होकर उसके पीछे सुधारवाद की भावना भी थी। यह विशेषता उनके साहित्य में सर्वत्र दृष्टिगोचर होती हैं। उनका सम्पूर्ण साहित्य आदर्श यथार्थवाद से परिपूर्ण है। उन्होंने सत्यम और शिवम का सुन्दर समन्वय किया है। इस प्रकार विभिन्न कहानीकारों ने अपने चिंतन अनुभूति और कला के द्वारा कहानी हो रचा है ।

हिंदी साहित्य की एक विधा निबंध को भी विद्वानों ने उसके व्यापक स्वरूप को देखते हुए इसे विचारात्मक भावनात्मक आदि वर्गों में रखकर उसका विवेचन किया है। चूंकि कुछ निबंध पूर्णरुप से आत्मपरक होते हैं। अन्य निबंध में भी लेखक के अपने विचार, अनुभूति का उल्लेख मिलता है। निबंध लेखक के व्यक्तित्वरुपी प्रणव से स्पंदित होते है। आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी का भी मत है

कि निबंध लेखक जिधर चलता है उधर संपूर्ण मासिक सत्ता के साथ अर्थात बुध्दि और भावनात्मक दृश्य दोनों लिए हुए रहते है। किन्तु अतंवरण निबंध में लेखक का व्यक्तित्व प्रधान रहता है। इस प्रकार के निबंधों में वह अपनी बात, अपना सुख-दु:ख, अपनी हार जीत अपनी स्मृति, अपने संदर्भ और अपने यात्रा वृत्तान्त का विवरण प्रस्तुत करता है। इस प्रकार के निबंधों में विषय एक उपकरण मात्र होता है। जैसे विश्वनाथ प्रसाद तिवारी निबंध के स्वरूप का उल्लेख करते हुए कहते है 'पत्र का कोई विज्ञापन, किसी लेखक की कोई पंक्ति , कोई भी घटना, प्रसंग, बाहय जगत के प्रति कोई भी प्रतिक्रिया भाव की कड़ी बनकर निबंध का स्वरुप खड़ा कर देती है।(१२) अतः सिद्ध होता है कि निबंध भी लेखक के आत्मानुभव पर आधारित होते हैं।

हिन्दी आलोचना में विगत एक शती के इतिहास में कई आलोचकों ने कर्म पर प्रत्यालोचनात्मक दृष्टि से विचार किया है। जिसमें समीक्षा आत्मानुभूति के आधार पर ही करता है। अतः आलोचनात्मक साहित्य में जीवन की आलोचना होती है इसलिए जहाँ साहित्य मात्र कला है, वहाँ आलोचना कला भी है और विज्ञान भी। अतएव कला और विज्ञान दोनों की परख करने वाले सत्यासमालोचन को सामान्य स्तर से ऊँचा उठा रहना आवश्यक है।(१३) अतः आत्मकथाकार की भाँति समालोचक को भी आत्मसात किये अनुभवों के साथ -साथ सरस और सहृदय तथा सत्यप्रिय होना आवश्यक है। जिससे आलोचक किसी रचना के अंतः सौंदर्य का साक्षात्कार कराने के अतिरिक्त पाठकों को उचित दिशा निर्देश भी दे सके।

आधुनिक जीवन को नयी द्रुतगामी वास्तविकता में हस्तक्षेप करने के लिए मनुष्य को नए साहित्यिक रूप विधानों को जन्म देना पड़ा है। रिपोर्ताज उनमें से प्रभावशाली और महत्वपूर्ण रुप विधान है। रिपोतार्ज में भी आत्मकथा के संस्कारों का प्रभाव है। रिपोतार्ज साहित्य हिंदी में नहीं के बराबर है। रिपोर्ताज का अर्थ एक रिपोर्ट से होता है, जिसमें लेखक अपनी आखों देखी दृश्य या घटना का ऐसा कलात्मक, चित्रात्मक, भावभरा विवरण प्रस्तुत करता है कि पाठक पढ़ते समय उसमें भावमग्न हो जाते है। इसमें लेखक घटना या दृश्य प्रति अपनी करुणा, सहानुभूति, आक्रोश, विद्रोह का विश्लेषण कर पाठकों के मन में इन भावों को जगाना चाहता है। अर्थात

लेखक एक रिपोर्ट लिखने के लिए इसमें तीन तत्वों का समावेश करता है किसी घटना का इतिहास और उसका परिवेश तो रहता ही है एक तीसरा तत्व भी रहता है जो रिपोतार्ज को कला का क्रांतिकारी रूप - विधान बना देता है। यह तीसरा तत्व है उस घटना में भाग लेने वाली शक्तियों की भीतरी इरादों, उनके कार्यक्रमों, उनकी गतिविधि, रीति नीति और उनके संघर्ष के परिणाम पर निर्भर भविष्य की दिशाओं का स्पष्टीकरण।जो कि लेखक का अनुभव प्रदान करती है। (१४)

जीवनी पर आत्मकथा साहित्य के संस्कारों का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है क्योंकि दोनों चरित्र चित्रण है किंतु फर्क इतना है कि आत्मकथा में लेखक स्वयं अपने जीवन-गाथा को लिखता है और जीवनी में लेखक दूसरे की जीवन गाथा का वर्णन करता है। जीवनी पर आत्मकथा के संस्कारों का प्रभाव ज़रूर है, किंतु यह सत्य पर आधारित होकर भी पूर्ण रूप से सत्य की क़रीब नहीं होती। इसमें जीवनी लेखक पूर्ण प्रयत्न करता है कि वह आत्मकथा का रूप ले ,लेकिन दूसरे के कार्यकलापों, भावों, घटनाओं को हम पूर्ण सत्यता से मालूम नहीं कर सकते है जितना कि स्वयं वह। इस आधार पर कहा जा सकता है कि जीवनी साहित्य का एक मनोवैज्ञानिक अध्ययन है। मनुष्य की मुद्रा और भाव उसके मन की क्रिया -प्रतिक्रियाएं और जीवन के क्रम में उसके मस्तिष्क के विकास का अध्ययन एक अत्यंत गूढ़ विषय हैं। मनुष्य का व्यक्तित्व मानसिक क्रियाओं का परिणाम है। इन मानसिक क्रियाओं का अध्ययन और उनका सफल चित्रण जीवनी साहित्य का अनिवार्य विषय हैं। निःसंदेह पूर्ण सत्यता पर आधारित जीवनी असंभव किंतु विष्णु प्रभाकर जी ने यह भी कर दिखाया उनकी लिखी जीवनी 'आवारा मसीहा' जो शरत चंद्र का जीवन चरित्र हैं। जिसे पढ़कर ऐसा प्रतीत होता है कि यह जीवनी न होकर आत्मकथा है। विष्णु प्रभाकर जीवनी लेखन की विशिष्टताओं पर प्रकाश डालते हुए कहते है कि जीवनी लेखन कोरा इतिहास मात्र होगा। अगर उसकी अभिव्यक्ति कलात्मक ढंग से न हो और उसमें लिखने वाले का व्यक्तित्व प्रतिफलित न हो। वह व्यक्ति विशेष का तटस्थ पर खुलकर किया गया अध्ययन होता है। इससे स्पष्ट होता है कि लेखक को जीवनी लिखते समय स्वयं को भूलकर नायक की व्यक्तित्व को महसूस कर जीवनी लेखन करना पड़ता है। (१५)

साहित्य की विभिन्न विधाओं में आत्मकथा के संस्कारों के प्रभाव विद्यमान तो रहते ही हैं। इसके अलावा लेखक अपनी आत्माबोध, अनुभूति की अभिव्यक्ति भी विभिन्न रुपों में करता है। जिससे आत्मकथा का एक अंश मात्र कहा जा सकता है। इन विभिन्न रुपों में निम्नलिखित रूप प्रचलित है भूमिका के रूप में, टिप्पणी के रूप में, प्रत्यालोचना रुप में, आत्म - संस्करण रुप में, नाटकीय शैली में लिखित अनुभूतियाँ, साक्षात्कार रुप में। इन सभी विधाओं के विश्लेषण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि अनुभूति को अभिव्यक्त करने का चाहे जो भी माध्यम रहा हो , चाहे जो भी विधा रही हो, पर हम सब के मूल में नि संदेह आंतरिक अनुभूति को अभिव्यक्त करने का जो भी माध्यम रहा हो, चाहे जो भी साहित्य की विधा रही हो पर इन सबके मूल में आंतरिक अनुभूतियों को अभिव्यक्त करने की इच्छा का मूल कारण प्रबल भाववेग ही है। स्पष्ट है किसी भी साहित्य में आत्मकथात्मक तत्व किसी न किसी रूप में विद्यमान् होने पर ही उसे आत्मकथा के रूप में स्वीकार नहीं किया जा सकता। यह स्पष्ट है की इस आत्मपरकता और आत्मकथा की आत्मपरकता में गुणात्मक और स्तरात्मक अंतर होता ही है। कई बार कोई साहित्य वास्तविकता के क़रीब होने के कारण आत्मकथा सा प्रतीत होता है किन्तु फिर भी वह आत्मकथा नहीं हो सकता। इस बात को लेखक के साथ साथ पाठक भी महसूस करते हैं। निष्कर्ष रुप से स्पष्ट होता है कि साहित्य सृजन प्रक्रिया में अभिव्यक्ति के लिए उत्सुक साहित्यकार के मानस की अस्पष्ट अनुभूतियाँ जब विशिष्ट कल्पना शक्ति द्वारा अभिव्यक्त की ओर अग्रसर होने लगती है तब साहित्यकार की अनुभूतियाँ, भावनाएँ, स्मृतियाँ एवं वस्तुबिम्ब मानस पटल पर मूर्त रुप धारण करके साहित्य का सृजन करती है।

सन्दर्भ सूची –

१. भटकती लहर - श्रीकांत दीवाना , आत्मकथ्य से
२. कौन किसे बांधे - रज्जन त्रिवेदी , दे शब्द से

डॉ. विनि विकास ढोमणे

३. स्वयं परिवेश का- किरण जैन , दो शब्दों से
४. संसद और सड़क - हीरालाल जैन ,अपनी और से
५. सूरज का सातवाँ घोडा- धर्मवीर भारती , पृष्ठ २२१
६. सात साल - मुल्कराज आनंद ,पृष्ठ २२१
७. मेरा परिवार - महादेवी वर्मा पृष्ठ १४,१५
८. आवाजों के घेरे - दुष्यत कुमार - पृष्ठ ५२
९. मेरी जेल डायरी - चंद्रशेखर पृष्ठ २१
१०. सिद्धांतलोचन - धर्मचंद संत पृष्ठ १७८
११. साहित्यनुशीलन - शिवदानसिंग चौहान , पृष्ठ ४८, ५०
१२. हिंदी के आलोचक -शचीरानी गुर्टू, पृष्ठ १२५
१३. साहित्यनुशीलन - शिवदानसिंग चौहान, पृष्ठ ५३,५५
१४. हिंदी साहित्य के जीवन चरित का विकास - लेखिका चन्द्रावती सिंग, पृष्ठ ११
१५. आवारा मसीहा - विष्णु प्रभाकर, पृष्ठ ९